International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628, Print ISSN: 2664-861X
Received: 21-11-2022, Accepted: 08-12-2022, Published: 24-12-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 115-117

पूर्वोत्तर भारतः नामकरण की पृष्ठभूमि

सेतु कुमार वर्मा
पीएच. डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत

सारांश
भारत एक विशाल देश है जहाँ साधारण व्यवहार में देश के किसी क्षेत्र का दिशात्मक नामकरण आम है, जैसे दक्षिण भारत, उत्तर भारत आदि। किन्तु पूर्वोत्तर भारत ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसका दिशात्मक–नामकरण आधिकारिक रूप से किया गया है। इस शोध–पत्र में पूर्वोत्तर की भौगोलिक स्थिति, उपनिवेशी अतिक्रमण, नामकरण की पृष्ठभूमि और स्वतंत्र भारत में स्थिति का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्दः पूर्वोत्तर भारत, दिशात्मक नामकरण, उपनिवेशवाद, आदिवासी, ट्राइबल, नस्लवाद, आदिवासी संघर्ष

भारत भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, भाषा आदि के क्षेत्र में इतनी विविधतापूर्ण है कि इसके के बारे में सामान्यीकृत रूप से कुछ कहना मुश्किल हो जाता है। भारत में हजारों भाषाएँ, कहीं आधुनिकता तो कहीं लोकजीवन, एक ही समय में दो अलग भौगोलिक परिवेश में अलग तरह का मौसम, कुछ बेहद अमीर बांकी बहुत गरीब जनता, सब कुछ है। अलग–अलग धर्म और परम्पराएं हैं, अलग विचार है, फिर भी एक और विचार है जो इस देश को जोड़े रखने के लिए ताकत और अधिकार देता है, वह है हमारा संविधान। भारत का संविधान हर नागरिक को बराबरी का हक देता है। संविधान हमें इस विविधता से उत्पन्न होने वाले अनचाहे तनाव को दूर करने की प्रेरणा और ताकत देता है।

वर्तमान[1] में राजनीतिक रूप से 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों वाला यह देश सांस्कृतिक रूप से बहुत विविधताओं के साथ जुड़ा हुआ है। विविधता किसी भूमि विशेष के समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है। किन्तु एक बड़ी आबादी में संवेदनशीलता और समझदारी के अभाव में यह सांस्कृतिक विविधता कई बार अप्रिय घटनाओं की शिकार बनती है। इसका एक बड़ा कारण अपने देश के विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों एवं लोगों के बारे में अनभिज्ञ रहना भी कहा जा सकता है। लोगों को देश के अन्य भागों की भौगोलिक स्थिति के बारे में नहीं पता रहता है। वहाँ के लोग कैसे रहते हैं, कैसे दिखते हैं, क्या खाते हैं, कैसा बोलते हैं, अपने साथी नागरिक के बारे में ऐसी मूलभूत जानकारी भी हमारे देश में नहीं रहती है। आए दिन होने वाली नस्लीय हिंसा की घटनाएँ इस देश की विविधता पर एक बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देती है। अपने विस्तृत भूभाग में भारत अनेक संस्कृतियों को समाहित किये हुए है। अफ़सोस की बात यह है कि एक बड़ी आबादी इन संस्कृतियों की भौगोलिक स्थिति तक को नहीं जानती है। ऐसी अनभिज्ञता और उससे उपजे समस्याओं का शिकार हमारा शोध–क्षेत्र पूर्वोत्तर भारत भी है। इस शोध–पत्र में हम पूर्वोत्तर–भारत को 'पूर्वोत्तर' (North-East) कहे जाने के इतिहास की पड़ताल कर रहे हैं। पूर्वोत्तर के ऐसे नामकरण की पृष्ठभूमि क्या थी, उसके पीछे की मंशा क्या थी और इसके फलस्वरूप आज पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों के आम लोगों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, ऐसे कुछ सवाल इस शोध कार्य के केंद्र में हैं।

'पूर्वोत्तर', आठ राज्यों का एक भौगोलिक सम्मुचय जो सांस्कृतिक, भाषिक और राजनीतिक रूप से अपने आप में वैसा ही विविधतापूर्ण है जैसा भारत की विविधता के बारे में कहा जाता है। पूर्वोत्तर भारत से तात्पर्य अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, सिक्किम और त्रिपुरा से है। भौगोलिक रूप से ये राज्य एक सम्मुच्य का निर्माण करती है जो भारत के राजनीतिक मानचित्र पर और भी विशेष हो जाती है क्योंकि एक स्थान पर इन राज्यों को शेष–भारत से जोड़ने वाली भारत की भूमि मात्र 20 किलोमीटर चौड़ी रह जाती है। राजनीतिक रूप से पूर्वोत्तर की स्थिति भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील रही है। किन्तु भारत के राजनैतिक हलकों में लम्बे समय से पूर्वोत्तर के मुद्दे बड़ी मुश्किल से सुनाई देते हैं। खास कर अगर मुद्दा वहाँ के आम लोगों की हितों से जुड़ा हुआ हो। पूर्वोत्तर का अधिकांश भाग अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से बंधा हुआ है। जिस पतले से भूभाग से पूर्वोत्तर शेष–भारत से जुड़ा हुआ है, उसे 'सिलीगुड़ी कॉरीडोर' के नाम से भी जाना जाता है, इसकी वजह से वाणिज्य–व्यापार, परिवहन आदि की सम्भावना सीमित हो जाती है। पिट्रिसा मुखिम लिखती हैं, "जिसे पूर्वोत्तर भारत कहा जाता है वह 2.55 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल का एक बड़ा भूभाग है जो देश के कुल क्षेत्रफल का महज 7 प्रतिशत भाग है। इस क्षेत्र की मात्र 2 प्रतिशत सीमा भारत के साथ साझा है, बांकी 98 प्रतिशत सीमा बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, नेपाल और चीन जैसे देशों से लगी हुई है।"[2] इसके कई सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पूर्वोत्तर के राज्यों पर देखने को मिलते हैं जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे। 269179 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले पूर्वोत्तर भारत में 200 से अधिक आदिवासी, गैर–आदिवासी समुदाय रहते हैं।[3] पूर्वोत्तर भाषिक रूप से बेहद समृद्ध और विविधतापूर्ण है। अलग–अलग समुदायों द्वारा विभिन्न भाषा परिवारों की करीब 420 भाषा एवं बोलियाँ यहाँ बोली जाती हैं।[4] यहाँ भाषाई विविधता ऐसी है कि कई बार एक ही मुख्य समुदाय के अन्दर के विभिन्न उप–समुदाय के लोग एकदूसरे की भाषा को नहीं समझ पाते हैं। पूर्वोत्तर में तिब्बती–बर्मन, एस्ट्रो–एशियाई, इंडो–यूरोपियन जैसी तमाम भाषा परिवार की भाषाएँ जीवित हैं। यह भाषावैज्ञानिक विविधता पूर्वोत्तर को बहुत ख़ास बनाती है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत विश्व के सबसे विविधतापूर्ण क्षेत्रों में आता है। सांकृतिक दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत बेहद समृद्ध है। यहाँ आदिवासी एवं गैर–आदिवासी दोनों समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा देखने को मिलती है। पूर्वोत्तर के आदिवासी समुदायों का जीवन पीढ़ियों में विकसित लोकसंस्कृति द्वारा संचालित होता है। पूर्वोत्तर के आदिवासी

समुदायों पर पड़ने वाले तमाम बाहरी प्रभावों के बावजूद इनकी लोकसंस्कृति के मुख्य तत्व आज भी जीवन और व्यवहार से जुड़े हुए हैं।

भारत एक विशाल एवं विविधतापूर्ण देश है। हिमाच्छादित पहाड़, पठार, सघन वन, द्वीप समूह, मरुस्थल, नदियों के विशाल मैदानी भूभाग से लेकर बेहद लंबी समुद्रतटीय सीमा भारत को भौगोलिक दृष्टि से सबसे विविधतापूर्ण देशों की श्रेणी में ले आती है। भौगोलिक विविधता के साथ ही भारत सांस्कृतिक, भाषिक और सामाजिक विविधताओं की दृष्टि से भी विशिष्ट है। लेकिन राजनीतिक रूप से आधुनिक राष्ट्र–राज्य के नियमों के अधीन पूरे भारत की विविधताओं को समेट कर, सबके साथ समान न्याय और व्यवहार करते हुए आगे बढ़ना एक चुनौती का विषय रहा है। यहाँ सत्ता कुछ क्षेत्र एवं समुदायों के पास केन्द्रित रही है, जिसके फलस्वरूप भारत के कई समुदाय और क्षेत्र हासिये पर चले गए हैं। इसके साथ ही भारत के विभिन्न क्षेत्रों को केंद्र के परिप्रेक्ष्य में देखने की जिस प्रक्रिया की शुरुआत ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन के समय शुरू हुई थी, स्वतंत्रता के बाद भी वह चलती रही। भारत के उत्तरी हिस्से के कई राज्यों को उत्तर भारत कहा जाने लगा तो दक्षिणी हिस्से को दक्षिण भारत। लेकिन दक्षिण भारत या उत्तर भारत की अपेक्षा पूर्वोत्तर (North-East) भारत एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है जो अधिकारिक रूप से संगठित और नामित क्षेत्र है।[5]

इस क्षेत्र के लिए पूर्वोत्तर शब्द के उपयोग का शुरुआती प्रमाण एलेग्जेंडर मेकेंजी (Alexander Mackenzie) की लेखनी में मिलता है। मेकेंजी ने 1869 ई में "Memorandum on the North-East Frontier of Bengal" लिखी। इस रिपोर्ट में वर्तमान पूर्वोत्तर के कई आदिवासी समुदायों के साथ ब्रिटिश सत्ता के संबंध, चुनौती और भविष्य की नीतियों पर सुझाव दिए गए हैं। इसके बाद मेकेंजी ने 1884 ई में "History of The Relations of Government with the Hill Tribes of the North-East Frontier of Bengal" लिखी। इसकी भूमिका में उन्होंने उल्लेख किया है कि 1835 ई में कैप्टन आर बोइलेउ पेम्बरटन (Capt R Boileau Pemberton) के "Report On Eastern Frontier Of British India" के बाद असम, चचार और चिटगांव के पहाड़ी पर रहने वाले आदिवासियों के सरकार के साथ राजनीतिक संबंध पर कोई सर्वे नहीं हुआ था। ऐसे में उनका 'मेमोरेंडम' स्थानीय सरकारों और भारत सरकार के विदेश विभाग के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ।[6] पेम्बरटन और मेकेंजी ने कमोबेश एक ही भौगोलिक क्षेत्र के आदिवासी समुदायों के संबंध में लिखा है लेकिन इसके लिए जहाँ पेम्बरटन 'पूर्वी सीमांत' (Eastern Frontier) शब्द का उपयोग किया है वहीं मेकेंजी ने 'पूर्वोत्तर सीमांत' (North-East Frontier) शब्द का प्रयोग किया है। इसका कारण दोनों के कार्यक्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में इन समुदायों का अध्ययन हो सकता है। पेम्बरटन ब्रिटिश भारत के परिप्रेक्ष्य में इन समुदायों की भौगोलिक स्थिति देख रहे थे और मेकेंजी बंगाल प्रेसिडेंसी के परिप्रेक्ष्य में। किन्तु इस क्षेत्र के लिए मेकेंजी द्वारा उपयोग किया गया "North-East" शब्द चर्चित और धीरे–धीरे स्वीकृत हो गया। भारतीय उपमहाद्वीप में साम्राज्य स्थापित करने के बाद ब्रिटिश सत्ता ने कुछ क्षेत्रों के नामकरण में दिशात्मक स्थान–नामकरण (directional place-name)[7] का प्रयोग किया। इसके केंद्र से जो क्षेत्र दूर थे उनके लिए "Frontier" (सीमांत) शब्द का प्रयोग उन्होंने दो जगह किया। एक तरफ North West Frontier Province (NWFP) जो आज के पाकिस्तान का खैबर पख्तूनखवा प्रान्त है। वहीं दूसरी तरफ North-East Frontier Tract जो वर्तमान में लगभग संपूर्ण अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड का कुछ हिस्सा है। ये सीमांत प्रदेश उनकी सत्ता के सीमा निर्धारण के लिए बेहद महत्वपूर्ण थे। स्वतंत्रता के बाद इस क्षेत्र के प्रति केंद्र सरकार और उसके जिम्मेदार अधिकारियों की राजनीतिक दृष्टि भी कमोबेश वैसी ही दिखती है। अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं और आंतरिक विरोध के अतिरिक्त भय से ग्रसित होकर इस क्षेत्र के प्रति ऐसे फैसले लिए गए और ऐसी नीतियाँ बनाई गई जो यहाँ के आम लोग के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली रही हैं। पूर्वोत्तर के आधिकारिक नामकरण के बारे में संजीव बरुआ लिखते हैं,

"'पूर्वोत्तर भारत' के आधिकारिक स्थान–नामकरण के पीछे उपनिवेशी सत्ता समाप्ति के बाद के भारत के प्रबंधकों द्वारा बेतरतीब और बिना सोचे–समझे लिया गया फैसला है। वे एक साम्राज्यवादी सत्ता के सीमांत क्षेत्र को एक 'सामान्य संप्रभु देश' का राष्ट्रीय क्षेत्र बनाना चाहते थे।"[8]

उस समय ब्रिटिश उपनिवेशी सत्ता पूर्वोत्तर के स्वतंत्र आदिवासी समुदायों को अपने नियंत्रण में करने के लिए अत्याचारी सैन्य दस्तों को भेज रहे थे। लेकिन उनकी अपेक्षा के विपरीत यहाँ उन्हें जबरदस्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। पूर्वोत्तर के विभिन्न भागों में आदिवासी योद्धाओं ने ब्रिटिश दस्ते के नेताओं को मार गिराया। एलेग्जेंडर मेकेंजी की लेखनी यूँ तो उपनिवेशी मानसिकता और उद्देशों से भरी हुई है लेकिन उसमें इन आदिवासी समुदायों के कड़े प्रतिरोध और साहस के प्रति भय और खीझ साफ़ देखी जा सकती है। [9]

इस क्षेत्र के लिए 'पूर्वोत्तर' संबोधन के अपने आप में कुछ सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं जिनकी चर्चा आवश्यक है। अंग्रेजों के शासन के समय 'पूर्वोत्तर' संबोधन के मूल में उपनिवेशी नीतियाँ और अपेक्षाएँ समाहित थीं। किन्तु भारत की आज़ादी के बाद इस क्षेत्र के लिए 'पूर्वोत्तर' शब्द का उपयोग जारी रहा। यहाँ तक कि भारत सरकार द्वारा आधिकारिक रूप से भी कई ऐसे कानून और संस्थाएँ स्थापित किये गए जिनका नाम पूर्वोत्तर पर आधारित था। 1971 ई में पाकिस्तान से उसके पूर्वी सीमा पर युद्ध और विजय के कुछ ही दिन बाद भारत सरकार ने Northeastern Areas (Re-organization) Act 1971 और North Eastern Council Act जैसे कानून बनाये। जो क्रमशः नए राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के गठन, विकास और सुरक्षा के मामलों में नीति एवं निर्देश के लिए थे। इसके अलावा भारत सरकार ने इस क्षेत्र के लिए एक मंत्रालय का भी गठन किया जिसे Union Ministry of Development of North-Eastern Region कहा जाता है। क्षेत्र में केन्द्रीय विश्वविद्यालय का गठन भी North Eastern Hill University (NEHU) के नाम से हुआ। इसके साथ ही क्षेत्र से दूर दिल्ली में जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में The Centre for North East Studies and Policy Research और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में Special Centre for the Study of North East India जैसे विभाग इस क्षेत्र पर केन्द्रित अध्ययन के लिए खोले गए।[10] एक तरह से आठ अलग राज्यों को एक सम्मुचय के रूप में देखना आधिकारिक रूप से स्थापित हो गया।

पूर्वोत्तर के राज्यों को एक सम्मुचय के रूप में देखने से अक्सर यहाँ के विभिन्न राज्यों और उन राज्यों के भी विभिन्न समुदायों के मुद्दों, अपेक्षाओं और आकाँक्षाओं का सामान्यीकरण हो जाता है। पूर्वोत्तर के लोग अपने आपको अपने समुदाय के नाम से जानने के पक्ष में हैं। इसका उदाहरण देते हुए संजीव बरुआ ने लिखा है कि "पूर्वोत्तर के लोग अपने बारे में बात करते हुए सामान्यतः यह नहीं कहते कि 'एक नार्थईस्टनर होने के नाते मैं...।' बल्कि वे कहते हैं, 'एक मणिपुरी..., एक खासी..., एक नागा, होने के नाते मैं...'"[11]

भारत के शेष भागों में पूर्वोत्तर के लोगों के साथ होने वाले नस्लभेदी अपराधों से हम अवगत हैं। इस तरह के नस्लीय हमले करने वाले लोग पूर्वोत्तर के लोगों के रूप–रंग, खान–पान और अपनी पूर्वाग्रही धारणा के आधार पर करते हैं। उन्हें उनके राज्यों के अंतर के बारे में पता नहीं होता। ऐसे में पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों के लोग इस नकारात्मक परिस्थिति में अपने आपको एकदूसरे के साथ पाते हैं। और यह साथ एकजुटता को जन्म देता है। अपने–अपने क्षेत्रों में भले ही दो समुदाय और राज्यों के बीच संबंध थोड़े तनाव वाले हों लेकिन घर से दूर एक सामान्यीकृत हमलें का सामना करने के लिए सभी समुदाय के लोग एक साथ खड़े हो रहे हैं। इस तरह की एकजुटता को कई विद्वानों ने 'निगेटिव सॉलिडेरिटी' [12] का नाम दिया है।

पूर्वोत्तर के लोगों को एक व्यक्ति समूह के रूप में देखने के पीछे कहीं न कहीं नस्लीय प्रोफाइलिंग की धारणा भी काम करती है। पूर्वोत्तर के लोगों को उनके रूप–रंग के आधार पर एक समूह के रूप देखने का पूर्वाग्रह बेहद आम रहा है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पूर्वोत्तर के नामकरण का इतिहास उपनिवेशी शासन से जुड़ता है। अंग्रेजी उपनिवेशी अधिकारियों ने अपने रिपोर्टों में इस क्षेत्र के लिए सबसे पहले North-East (पूर्वोत्तर) शब्द का उपयोग किया। स्वतंत्रता के बाद भी भारत की केंद्र सरकारों और उनके अधिकारियों ने पूर्वोत्तर शब्द का उपयोग जारी रखते हुए इसे आधिकारिक नाम भी दे दिया। इस क्षेत्र पर लागू होने वाले कुछ कानून से लेकर सार्वजनिक शिक्षा संस्थान तक पूर्वोत्तर शब्द की स्थापना की है।

इस नामकरण का प्रभाव पूर्वोत्तर के आम लोगों पर देखा जा सकता है। सामान्यीकृत रूप से पूर्वोत्तर कहने से पूर्वोत्तर के आठ राज्य और उनके अनेकों समुदायों के मुद्दों को उभर कर आने का अवसर नहीं मिलता। किन्तु पूर्वोत्तर शब्द ने यहाँ के विभिन्न राज्यों के लोगों को शेष–भारत में उनके साथ होने वाले अन्यायों के खिलाफ एकजुट हो कर संघर्ष करने का अवसर दिया है।

संदर्भ सूची

1. दिसम्बर 2022 में भारत के 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। अक्तूबर, 2019 में संसद द्वारा जम्मू और कश्मीर के राज्य के दर्जे को ख़त्म कर 'जम्मू और कश्मीर' तथा 'लद्दाख' केंद्र शासित प्रदेश का गठन किया गया।
2. Patricia Mukhim, Where is this North-East, India International Centre Quarterly, Vol- 32 No- 2/3, Where the Sun Rises When Shadows Fall: The North-East (MONSOON-WINTER 2005), India International Centre, page 178.
3. https://indianculture-gov-in/north-east-archive/history-north-east
4. John Samuel, Language and Nationality in North-East India, Economic and Political Weekly, Vol- 28, No- 3/4 (Jan- 16-23,1993), page- 91, ''About 420 languages and dialects of different language families are used in a complex and wide-ranging ethno and socio-linguistic configuration in north-east India''
5. Sanjib Baruah, In The Name Of The Nation, India and Its Northeast, The Invention of Northeast India Standford University Press, Standford, California, 2020, Page 34.
6. Alexander Mackenzie, Memorandum on the North-East frontier of Bengal, Bengal Secratariet Press, Calcutta, 1869, page i
7. Sanjib Baruah, In The Name Of The Nation, India and Its Northeast, The Invention of Northeast India Standford University Press, Standford, California, 2020, Page 2
8. ibid
9. Alexander Mackenzie, Memorandum on the North-East frontier of Bengal, Bengal Secratariet Press, Calcutta, 1869
10. Deepak Kumar, What is in a Name - Northeast India, Armchair Journal, 2020, https://armchairjournal-com/what-is-in-a-name-northeast-india/
11. Sanjib Baruah, In The Name Of The Nation, India and Its Northeast, The Invention of Northeast India Standford University Press, Standford, California, 2020, Page 1
12. Duncan McDuie-Ra, Prof Subba ने इस विषय पर विस्तार से लिखा है। उनके विचार के केंद्र में भारत के शेष भागों में बसने वाले पूर्वोत्तर के प्रवासी नागरिक और उनके मुद्दे रहे हैं।